।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

मङ्गल बधाई पदावली
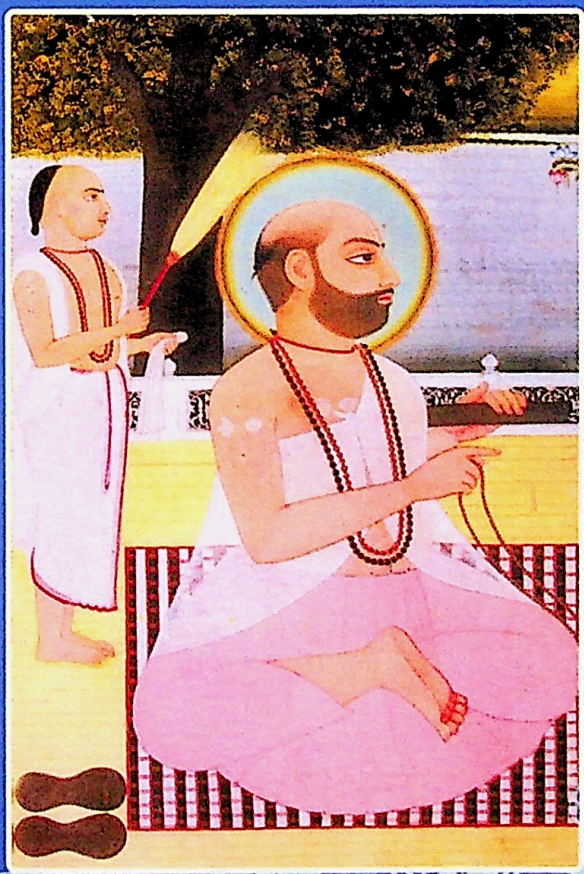
* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज

की

मङ्गल बधाई पदावली

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

वि. सं. २०७३ निम्बार्काब्द ५०११

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज
का

पावन-चरित

श्रीहंस भगवान् महर्षिवर्य चतुःसनकादिक देवर्षिप्रवर श्रीनारद एवं सम्प्रदाय प्रवर्तक श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य भगवदीय आज्ञानुसार इस परम पवित्र धराधाम के दक्षिणाञ्चल में गोदावरी तटवर्ती मूंगी के सुरम्य स्थान पर प्रकट हुए। समयान्तर में व्रजस्थ गोवर्धन सन्निकट निम्बग्राम (नीमगाँव) में तपःसाधना की। आचार्यश्री की ही पावन परम्परा में विक्रम की १४ वीं शताब्दी में ३५ वीं पीठिका में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्य मथुरा में नारद टीला के सुरम्य स्थान पर विराजे। और आपके ही पट्टशिष्य अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज जो निज गुरुदेव की आज्ञानुसार विपरीत बीभत्स कृत्य करने वालों का निराकरण करने हेतु राजस्थान में पुष्कर क्षेत्रीय निम्बार्कतीर्थ स्थल पर अपनी भगवत्परक तपःसाधना में संलग्न हुए। समय पाकर पैशाचिक सिद्धि वाले मस्तिंगशाह फकीर को आचार्यश्री ने परास्त किया। कालान्तर में आचार्यश्री के दर्शनार्थ खेजड़ला के ठा. श्रीसीयोजी भाटी के कथनानुसार बादशाह शेरशाह सूरी निम्बार्कतीर्थ स्थल पर आचार्यश्री की तपःस्थली

पर पधारे, उस समय आचार्यश्री हवन कर रहे थे। बादशाह ने प्रणाम पूर्वक एक बहुमूल्य दुशाला समर्पण किया। अपने हवन कार्य से निवृत्त होकर बादशाह से जिज्ञासा की यहाँ आगमन कैसे हुआ। उसने उत्तर में निवेदन किया कि आचार्यप्रवर मेरे कोई सन्तति नहीं है अतः ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें जिससे कि मेरा मनोरथ पूर्ण हो। श्रीस्वामीजी ने बादशाह द्वारा समर्पित दुशाले को अपने प्रज्वलित हवन कुण्ड में भस्मीभूत कर दिया इस पर बादशाह ने अपने मानस में कुछ विचार किया। उसी समय श्रीस्वामीजी ने हवन कुण्ड से अनेक दुशाले बाहर रख दिये ओर उसे कहा पहचान लो तुम्हारा दुशाला कौनसा है। इस पर बादशाह परम विस्मित हुआ और कहने लगा मैंने आपके स्वरूप को नहीं समझा मुझे क्षमा करें। जो मैंने पहले निवेदन किया कि मेरे कोई सन्तति नहीं। श्रीस्वामीजी ने कहा श्रीसर्वेश्वर प्रभु का स्मरण करो, तथा हवन कुण्ड से विभूति प्रदान कि और कहा सर्वज्ञ श्रीहरि तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करें। इस पर बादशाह प्रणाम पूर्वक अपने गन्तव्य स्थान पर गया। कालान्तर में उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम सलीमशाह चिश्ती रखा। पुनः जब वह आचार्यश्री के दर्शन हेतु आया तब निवेदन किया कि आपश्री के आशीर्वाद से यह पुत्र हुआ, यदि कृपा हो जाय तो इसके नाम से यहाँ एक गाँव बस जाय। श्रीस्वामीजी ने कहा जैसा प्रभु चाहेंगे वही होगा। तब से निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) कहा जाने लगा। खेजडला (नागोर) के ठा. श्रीसीयोजी जो

आपसे यमुना तट पर (वृन्दावन) में पहले से ही दीक्षित थे, तथा श्रीस्वामीजी महाराज के कथनानुसार आचार्यपीठ के निर्माण में शिलान्यास किया गया। शनैः शनैः श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ का विशाल रूप होगया। श्रीस्वामीजी के उपर्युक्त चरित का जो वर्णन किया गया, जिसे अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज की आज्ञानुसार प्रकाशित किया गया जिसके अनुशीलन से भक्तजन लाभान्वित होंगे।

मंगलाना-वास्तव्य-
अश्विनीकुमार शास्त्री
प्रधानाध्यापक-
राज. प्रा. संस्कृत विद्यालय
निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद
जि. अजमेर (राजस्थान)

मंगल बधाई पदावली

पद–

आज महामंगल भयो माई।
प्रगटे श्रीपरशुराम सह, सुंदर सन्तन के सुखदाई।।
नव निकुंज श्रीप्रेममंजरी, दम्पति अति मन भाई।
श्रीगोविन्ददेव मम स्वामिनी, रस बरषा बरषाई।।१।।

पद–

बाजत सुनियत आज वधाई।
भाद्रपकृष्ण पञ्चमी शुभ दिन, महामहोत्सव आई।।
प्रगटे प्रेम मंजरी प्यारी, दम्पति अति सुखदाई।
श्रीगोविन्दशरण बिन इनके, चरण शरण को पाई।।२।।

पद–

रंगीली वधाई आज बाजे।।
गुनि गंधर्व सर्व जुरि आये, श्रीहरिव्यास दरवाजे।।
देत दान मन वांछित सबनिकूं, सुयश वितान पुर छाजै।
प्रगटे श्रीपरशुरामदेव महल ते,
रसिकगोविन्द सिरताजे।।३।।

पद–

आज वधाई को दिन नीको।
प्रगटे परशुदेव सब सुखनिधि, रसिक मुकटमणि टीको।।
शुभ नक्षत्र शुभघरी महूरत, भाद्रपकृष्ण पंचमी पीको।
देत असीस सदा चिरजीवो,
रसिकगोविंद भयो ही को।।४।।

पद–

बाजत आज रंगीली बधाई।
कनक कलश ध्वज वन्दन माला, अमित वितानन छाई।।
भाद्रपकृष्ण पंचमी नीकी, यह उच्छब मन भाई।
ललितप्रिया श्रीपरमसहेली, कुंज केलि दरशाई।।५।।

पद–

आज सखी बाजत परम बधाई।
गगन सघन गरजत बरषत, लागत सरस सुहाई।।
प्रगटे परशुदेव सुख सागर, रसिक मुकुटमणि आई।
हरषप्रिया के प्राण जीवन धन, वृन्दावन सुखदाई।।६।।

पद–

आज बधाई मंगलचार।

प्रगटे श्रीपरशुदेव सुन सजनी, रसिक प्राणाधार ।।
भाद्रपकृष्ण पंचमी नीको, शुभ नक्षत्र ग्रह वार ।
अलीगोमती रसघन बरषत, जन हित परम उदार ।।७ ।।

पद–

आज नभ घनन घनन घन गरजै ।
चपला चमकत बूंदन बरषत, ऊमड़ि घुमड़ि पुनि तरजै ।।
कृष्ण पक्ष भाद्रपपांचे, शोभा लखि लखि मन लरजै ।।
प्रगटे परशुदेव रस–सागर, अलीगोमती अरजै ।।८ ।।

ध्रुपद–

आज तो बधाई माई बजत सुहाई,
देखो प्रगटे श्रीपरशुदेव सुख धामरी ।
कनक कलश ध्वज पताक तोरणबन्दनमाल, ग्रह ग्रह
मोतिन चौक पुरे अभिरामी ।।
बन्दी मागध सूत गुनी गन्धर्व जुरे, हंस बंस सह जस
गावे श्यामाश्याम री ।
श्रीहरिव्यास सबै दियो है अमित दान, प्रफुल्लित
अलीगोमती पूरे मनकामरी ।।९ ।।

पद–

जै जै देव देव परशुराम।

निगमागम मथि ग्रंथ रच्यो जिन,

परशु सहित श्रीसागर नाम।।

भव समुद्र के तारण कारण, जनमन पूरण काम।

अली गोमती स्वामिनि प्रगटे,

दायक श्यामाश्याम।।१०।।

पद–

प्रगटे आज रसिक सिरताज।

श्रीबृंदावन नव निकुंज में, दम्पति सखिन समाज।।

सदा निरन्तर एक रस विहरत, श्रीहरिप्रिया के राज।

देत असीस सदा चिरजीवो, अलीगोमती काज।।११।।

दोहा–

बजत बधाई रसभरी, श्रीहरिव्यास के द्वार।

भाद्रपकृष्ण सुपञ्चमी, परशुदेव अवतार।।१।।

उमड़ि घुमड़ि घन गऱजही, नभधनु उदित विसाल।

शुभ नक्षत्र लखि मुदित सखी, गावति गीत रसाल।।२।।

मंगल–

जै जै श्रीपरशुरामदेव, अवनि पर अवतरे।
किये जीवन उद्धार विश्व सह दुखहरे॥
वेद कमल कुल भान, सुरहस्य प्रकाशही।
सुजन मधुप मकरंद, प्रेम रस वासही॥
चासही रस जुगल के यश, प्रेम रंगन कहि परै।
द्रगन रूप अनूप दरसत, भाव सहचरि उरधरै॥
परम रस माधूर्य्य दम्पति, हरिप्रिया मनमैं अरै।
जै जै श्रीपरशुदेव, अवनि पर अवतरै॥१॥
जै जै श्रीपरशुदेव, कृपानिधि गाइये।
जिन्ह पदरज सिरधारि, पार भव पाइये॥
प्रबल प्रचण्ड प्रताप, सकल जग जानही।
मर्दन दुष्टन मान, कुमत निशि भानही॥
भानु है अघ तिमिर नाशन, जनन की रक्ष्या करै।
भये मलैछ क्षितितल प्रगटे, ते सब चिह्न हरिजन के हरै॥
जेहि नाम साह मस्तिंगसिद्धि, बलधर्म देतन साईये।
जै जै श्रीपरशुरामदेव, कृपानिधि गाइयै॥२॥
जै जै श्रीपरशुरामदेव, तेज गुन खान है।
श्रीवृन्दावनवास नित, सकल दुख दान है॥

श्रवण सुनी यह मलेच्छहि, धर्म विनासि है।
जाये तहां प्रभु देख्यो, तेज प्रकासी है।।
प्रकासि है जिन्ह तेज न भविच, अधर अम्बर तनि रहै।
बैठि ता पर भजत इष्ट सु, अभय काहू नहि चहै।।
जाय ता सिर नभ प्रकास्यो, तेज अपनो प्रधान है।
जै जै श्रीपरशुरामदेव, तेज गुण खान है।।३।।
जै जै श्रीपरशुरामदेव, रसिक वर राजही।
नभ ते ताहि गिराये, धरनि पर भ्राजही।।
पुनि उठि मुष्टि प्रहार, चह्यो प्रभु पर सही।
भयो भुजा स्तम्भ, सिद्धि बुधि सब ढही।।
ढही प्रबल प्रतापसिद्धि बुधि, दीन ह्वै चरनन परे।
त्राहि वचन दयाल सुनि तेहि, भक्ति दै सब दुःख हरे।।
ललित परम सहेलि नित अली,–गोमती यश गावहीं।
जै जै श्रीपरशुरामदेव, रसिकवर राजही।।४।।१२।।

राग धनाश्री--

हरि परहरि भरमत मति मेरी ।।
कहत पुकारि दुरावत नाहिन
यह तौ प्रगट फिरत नहिं फेरि ।।टेक ।।
श्री गुरु सबद न मानत कबहूं
उमगि चलत अपणी हर हेरी ।।
तजि निजरूप विषै मन मानत
उरझत हित सौं बूडण की बेरी ।।१ ।।
नाहिंन संक करत काहू की
चरत निसंक अति कूप तैं नेरी ।।
परसराम छिटकि परी जो भौ जल मैं
सो अब कैसे पाईयत हेरी ।।२ ।।१ ।।

राग धनाश्री--

जीव निफल हरि भगति विसारी ।।
आसा वसि बेकाम राम तजि
वादि मुएं भौ धर्म भिखारी ।।टेक ।।
ज्यौं कायर दल चलत सूर विण
धीर न धरत गहै भै भारी ।।
जाणि परत बल हीण राज विण
जो पहूच्यौ तिनहिं चढी मारी ।।१ ।।

ज्यों गजराज अनाथ दांत नाक विण

पीव बिहुण सोभित नहीं नारी।।

सिंधु अपीव पहुप बिन परमल सकल

साच बिण विषै विकारी।।२।।

ज्यौं जल नाव कीर बिण बूडत डोलत

पूंजि तूट थकित व्यौपारी।।

परसराम हरि भगति हीण नर

नांव कहाइ महा निधि हारी।।३।।२।।

राग धनाश्री--

ऐसे ही जात सकल संसारा।।

स्वारथ स्वाद विषै रस विलसत

रहत न कबहूं न्यारा ।।टेक।।

ढिंभ मोह माया वसि मिलि

करि जनम गंवावत सारा।।

जो सुपनैं सोवत सुख मानत

तो सूझत वार न पारा।।१।।

उपजत खपत अलेखै पल पल आवत जात असारा।।

बूडत सकल समूह सिंधु मैं

बांधि कर्म भर्म के भारा।।२।।

निसि वासर एक तार कपट

मति करत कर्म कौ हारा ।।
जैसे तजत पतंग अपण प्राण कौं
परि पावक की धारा ।।३ ।।
नहीं गुर ग्यान ध्यान उर दीपक
मिटत न कबहूं अंधारा ।।
परसराम निरफल तरु फल विण
सूक साक खल खारा ।।४ ।।३ ।।

राग धनाश्री--

हरि विण धिग् जीवण व्योहारा ।।
जो लगत न मन गोपाल भजन
सौ तजत न विषै विकारा ।।टेक ।।
कलि कौ रस विलसत सुख
करि परिगण कठिन कारा ।।
अब मिटत न वै जु दुवासू
निकसे गत कागद के कारा ।।१ ।।
निघट गई निज सौंज वादि पैं
कछु सोचि न कियो विचारा ।।
हार्‌यो रतन जनम खलि
साटै बहुरि न मिलत उधारा ।।२ ।।
जूंनि अगण जल थल भर्मत

सुख न लहत फिरि सारा।।
परसराम जो भगवत विमुख
नर धर्मराइ कै प्यारा।।३।।४।।

राग धनाश्री--

जब लग हरि सुमिरन नहीं करिए।।
तब लग जीवन जनम अकारथ
भरमि भरमि दुख भरिए।।टेक।।
अति अथाह दुस्तर भवसागर सों कैसे करि तरिए।।
हरि जिहाज पाये बिण
ता महि बूडि भले बहि मरिए।।१।।
अति संकट ससौ सुख नाहीं
जो मित्र मुरारि न करिए।।
प्रीतम परम हितू पूरै
बिण परसा पारि न परिए।।२।।५।।

राग धनाश्री--

जनम सिराय गयो सु न जाण्यौ।।
हरि सुमिरन बिण वादि जहां
तहां भरमत सोच न आण्यौ।।टेक।।
आल जाल जम काल काजि
कलि जुग सौं वांनिक वान्यौ।।

विलसत विषै विकारनि

अचवत भव समुद्र कौ पान्यो ।।१ ।।

अग्य अगिण अघ भार सांचि

उरि सुकृत करि परवान्यौ ।।

परम पवित्र पतित पावन

जस सो कबहुं न बखान्यौ ।।२ ।।

गायो सुण्यो न सुमर्‍यो

कबहूं हरि देख्यो न पिछाण्यौ ।।

सदा अचेत परम मंगल

बिण कायर कर्म कुठाण्यौ ।।३ ।।

भयो बूडि व्यौहार हाणि घर

जाणि लाभ करि करि मान्यौ ।।

परसा प्रभु बिण धूंधकार मैं

अंध असमझि बिझान्यौ ।।४ ।।६ ।।

*